सं स्रो.वि./एफ.डी./147-83/55932.—चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज जे.एम.ए. इन्डस्ट्रीज लि. 14/6, भथुरा रोड, फरीदावाद के श्रमिक श्री बनवारी लाल तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखि त मामरं में कोई स्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 5415 3 श्रम-68/15254 दिनांक 20-6-1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245 दिनांक 7-2-58 द्वारा उनत श्रिधिनयम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायलय फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या अससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामजा न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामजा है या विवाद से सुसंगत श्रयव संबन्धित मामला है:—

क्या श्री बनवारी लाल की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं स्रो.वि../एफ.डी./148-83/55939. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० हरियाणा मैन्यूफैनचरिंग प्रा.िल. डी.एल.एम. फरीदाबाद के श्रमिक श्री जनेश्वर तथा उसके प्रबंधकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

ै इसलिये, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20-6--1968 के साथ पढ़ते हुये श्रिधिसूचना सं. 11495-जी.-श्रम/57/11245, दिनांक 7-2-58 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदावाद को विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच था तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:---

क्या श्री जनेण्वर की सेवाभ्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० श्रो.वि./यमुना/323-83/55946.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल, की राय है कि मैसर्ज प्रकाश प्रोडेक्ट, छळरोली गेट, जगाधरी, के श्रमिक श्री राम मूरत तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्यौगिक विवाद है;

भीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है ;

इसलिए, श्रब, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (म) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 54-15-3-श्रम-68/15254 दिनांक 20-6-1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245 दिनांक 7-2-58 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के अगोन गठित श्रम न्यायायलय फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे जिल्हा मामता न्यायिनियं के लिए निद्धिट करते हैं. जो कि उका प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो श्रिवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथना संबन्धित भामला है:---

क्या श्री राम मूरत की सेवाधों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि |यमुना | 205-83 | 55952. --चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० हरियाणा राज्य परिवहन, यमुना नगर, के श्रमिक श्री जागीर सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौ द्योगिक विदाद है; ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इस लिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उाधारा (1) के खाउ (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20-6-1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7-2-58 द्वारा उक्त श्रिधिनयम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनियं के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादश्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है ;—

वया श्री जागीर सिंह की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राह्त का ह्कदार है ?